सूरह — एक कहानी

सूरह अल-जासिया

घुटनों के बल

पूरा सफ़र — हर तरफ़ निशानियाँ, और वो दिन जब क़ौमें घुटनों के बल —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 45 • 37 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

इन्न फ़िस्-समावाति वल्-अर्ज़ि ल-आयातिल्-लिल्-मु'मिनीन
3. बेशक आसमानों और ज़मीन में मोमिनीन के लिए निशानियाँ हैं।

अ फ़-र-अयत मनित्तख़ज़ इलाहहू हवाह
23. क्या तुमने उसे देखा जिसने अपनी ख़्वाहिश को अपना ख़ुदा बना लिया?

व क़ालू मा हिय इल्ला हयातुनद्-दुन्या नमूतु व नह्या व मा युह्लिकुना इल्लद्-दह
24. और वो कहते हैं: हमारी तो बस यही दुनिया की ज़िंदगी है, हम मरते और जीते हैं, और हमें बस ज़माना ही हलाक करता है।

व तरा कुल्ल उम्मतिन जासियह
28. और तुम हर उम्मत को घुटनों के बल गिरा हुआ देखोगे।

हाज़ा किताबुना यन्तिकु 'अलैकुम बिल्-हक़्क़
29. ये हमारी किताब है जो तुम्हारे बारे में सच सच बोलती है।

मन 'अमिल सालिहन फ़-लि-नफ़्सिह व मन असा-अ फ़-'अलैहा
15. जिसने नेक अमल किया अपने लिए, और जिसने बुरा किया उसका वबाल उसी पर है।

निशानियाँ, तह-दर-तह

बेटा, ये सूरह 'हा मीम' से खुलती है और फिर एक बा-क़ायदा और ख़ूबसूरत काम करती है: **ये आपको कायनात में सब से बड़े पैमाने से सब से छोटे तक चलाती है**, और हर तह के बाद ये नाम लेती है कि उस में निशानी **कौन** देख सकता है।

'**इन्न फ़िस्-समावाति वल्-अर्ज़ि ल-आयातिल्-लिल्-मु'मिनीन** — बेशक, **आसमानों** और **ज़मीन** में **मोमिनीन** के लिए निशानियाँ हैं।'

'**व फ़ी ख़ल्क़िकुम व मा यबुस्सु मिन दाब्बतिन आयातुल्-लि-क़ौमिंय्-यूक़िनून** — और **तुम्हारी अपनी तख़्लीक़** में, और जो वो **चलने वाले जानवर फैलाता** है, **यक़ीन** वालों के लिए निशानियाँ हैं।'

'**वख़्तिलाफ़िल्-लैलि वन्-नहारि व मा अन्ज़लल्लाहु मिनस्-समा-इ मिर्-

रिज़्क़िन फ़-अह्या बिहिल्-अर्ज़ ब'अ्द मौतिहा व तस्रीफ़िर्-रियाहि आयातुल्-लि-क़ौमिंय्-य'क़िलून** — और **रात** और **दिन** के **बदलने** में, और उस **रिज़्क़** में जो अल्लाह आसमान से उतार कर मरी ज़मीन को ज़िंदा करता है, और **हवाओं** के **फेरने** में, **अक़्ल** वालों के लिए निशानियाँ हैं।'

बेटा, तीन निशानियों के साथ जुड़े **तीन बयान** ग़ौर कीजिए: 'लिल्-मु'मिनीन' — मोमिनीन के लिए; 'लि-क़ौमिंय्-यूक़िनून' — यक़ीन वालों के लिए; 'लि-क़ौमिंय्-य'क़िलून' — उन लोगों के लिए जो अपनी **अक़्ल इस्तेमाल** करते हैं।

निशानियाँ हर एक के लिए एक जैसी हैं। आसमान मुनकिर और मोमिन दोनों के ऊपर बराबर है। **फ़र्क़ वो आला है जो पढ़ने के लिए इस्तेमाल होता है।** बेटा, ये सूरह आपको साफ़ बता रही है: **सबूत कभी ग़ायब हिस्सा न था। रिसीवर था।**

और जुमला देखिए '**मा यबुस्सु मिन दाब्बह**' — जो वो चलने वाले जानवर **फैलाता** है। 'यबुस्सु' का मतलब **दूर दूर तक फैलाना और बिखेरना।** बेटा, सिर्फ़ तनव्वो सोचो: गहरे समुंदर की वो मख़लूक़ जिसे किसी ने न देखा, मिट्टी के एक मुरब्बा मीटर में कीड़े, बर्र-ए-आज़म पार करते परिंदे। **सब एक हाथ से बिखरे हुए।**

'तिल्क आयातुल्लाहि नत्लूहा 'अलैक बिल्-हक़्क़ — ये अल्लाह की आयतें हैं जो हम तुम्हें सचाई के साथ पढ़ते हैं — **फ़-बि-अय्यि हदीसिम्-ब'अ्दल्लाहि व आयातिही यु'मिनून** — तो अल्लाह और उसकी आयतों के बाद वो **किस बात** पर ईमान लाएँगे?'

वो आदमी जो अपनी ख़्वाहिश को पूजता है

फिर सूरह एक ख़ास क़िस्म के सुनने वाले को बयान करती है: 'वैलुल्-लि-कुल्लि अफ़्फ़ाकिन असीम — हर गुनहगार **झूठे** के लिए **तबाही** — **यस्म'उ आयातिल्लाहि तुत्ला 'अलैहि सुम्म युसिर्रु मुस्तक्बिरन क-अल्-लम यस्म'हा** — जो अल्लाह की आयतें अपने सामने पढ़ी जाते **सुनता** है, फिर **ग़ुरूर** से **अड़** जाता है **गोया उसने उन्हें सुना ही न हो।**'

बेटा, '**क-अल्-लम यस्म'हा**' — **गोया उसने सुना ही न हो।** कान चल रहे थे; आवाज़ पहुँची; **और आदमी बिल्कुल पहले जैसा जारी रहता है।** ये एक ख़ास क़िस्म का **बहरापन** है जिसे कोई डॉक्टर ठीक नहीं कर सकता।

'व इज़ा 'अलिम मिन आयातिना शै-अन इत्तख़ज़हा हुज़ुवा — और जब वो हमारी आयतों में से कुछ **जानता** है, उसे **मज़ाक़** बना लेता है।'

और फिर, बेटा, पूरे क़ुरआन की सब से चुभती हुई आयतों में से एक आती है — **एक आयत जो आज ज़मीन के सब से आम मज़हब को बयान करती है, और उसके ज़्यादातर पैरोकारों को पता तक नहीं कि वो उस से ताल्लुक़ रखते हैं:**

'**अ फ़-र-अयत मनित्तख़ज़ इलाहहू हवाह** — **क्या तुमने उसे देखा जिसने अपनी ख़्वाहिश को अपना ख़ुदा बना लिया?**'

बेटा, अल्फ़ाज़ को ग़ौर से जज़्ब कीजिए। ये ये नहीं कहता कि वो किसी बुत की, या किसी शख़्स की, या सूरज की इबादत करता है। **ये कहता है कि उसका इलाह — उसका ख़ुदा — उसकी हवा है, उसकी ख़्वाहिश, उसका ज़ाती रुझान।**

और एक शख़्स ये कैसे करता है? किसी मंदिर में अपनी ख़्वाहिश के आगे झुक कर नहीं। **वो अपनी ख़्वाहिश को आख़िरी इख़्तियार बना कर करता है।** वो जो भी करने का मन करे वो सही हो जाता है। वो जो करने का मन न करे वो ग़ैर-ज़रूरी हो जाता है। **सबूत सिर्फ़ तब तक जाँचा जाता है जब तक वो उस से इत्तिफ़ाक़ करे; हुक्म सिर्फ़ तब क़ुबूल होता है जब वो उसे भाए।**

बेटा, ख़ुद को यूँ जाँचिए। जब आप जान लें कि कोई चीज़ हराम है, तो **क्या हुक्म मामला तय कर देता है — या आप एक ऐसी राय ढूँढना शुरू करते हैं जो उसे जायज़ करे?** जब कोई हुक्म ना-गवार हो, तो क्या आप इताअत करते और उसे ना-पसंद करते हैं, **या आप ख़ामोशी से उसे 'इतना अहम नहीं' में दोबारा दर्जाबंदी कर देते हैं?**

क्योंकि **जो शख़्स सिर्फ़ उस चीज़ की इताअत करता है जो उस से इत्तिफ़ाक़ करे वो बिल्कुल इताअत नहीं कर रहा**, बेटा। **वो ख़ुद अपनी पैरवी कर रहा है, और दीन को सजावट के तौर पर इस्तेमाल कर रहा है।**

'**व अज़ल्लहुल्लाहु 'अला 'इल्मिन** — और अल्लाह ने उसे **इल्म के बावजूद** गुमराह छोड़ दिया।' बेटा, ग़ौर कीजिए: '**इल्म के बावजूद**'। **वो जानता था। यही वो चीज़ थी जिसने इसे एक चुनाव बनाया।**

'व ख़तम 'अला सम्'इही व क़ल्बिही व ज'अल 'अला बसरिही ग़िशावह — और उसने उसके **कान** और उसके **दिल** पर **मुहर** लगा दी और उसकी **आँख** पर एक **पर्दा** डाल दिया।' बेटा, **मुहर चुनाव के बाद आती है, कभी उस से पहले नहीं। अल्लाह उस दिल को ताला नहीं लगाते जो उन्हें तलाश कर रहा था।**

बस यही ज़िंदगी

'**व क़ालू मा हिय इल्ला हयातुनद्-दुन्या नमूतु व नह्या व मा युह्लिकुना इल्लद्-दह्र** — और वो कहते हैं: हमारी तो **बस यही दुनिया की ज़िंदगी** है; हम **मरते** और **जीते** हैं, और हमें बस **ज़माना** ही **हलाक** करता है।'

बेटा, ये चौदह सौ साल पुरानी वो अक़ीदा की नक़्ल है **जिसे आज लाखों लोग रखते हैं**: ये ज़िंदगी बस इतनी ही है; पैदाइश और मौत बस हयातियात है; और जो हमें मारता है वो बस वक़्त का गुज़रना है। **कोई मक़सद नहीं, कोई फ़ैसला नहीं, कोई फ़ैसला करने वाला नहीं — सिर्फ़ घड़ी।**

और अल्लाह का जवाब मुख़्तसर है: '**व मा लहुम बि-ज़ालिक मिन 'इल्म** — उन्हें इसका **कोई इल्म नहीं** — **इन हुम इल्ला यज़ुन्नून** — वो बस **गुमान** करते हैं।'

बेटा, ये एक तबाह-कुन जवाब है। वो अपना मौक़िफ़ **सख़्त-मिज़ाज हक़ीक़त-पसंदी** के तौर पर पेश करते हैं — और अल्लाह इसे वही कहते हैं जो ये है: '**ज़न्न**', गुमान। क्योंकि **किसी ने कभी ये सबूत पेश नहीं किया कि मौत के बाद कुछ नहीं।** दावा **यक़ीन के लिबास में एक गुमान** है।

और नबी ﷺ ने एक मुतअल्लिक़ा ग़लती से एक हदीस-ए-क़ुदसी में ख़बरदार किया: अल्लाह फ़रमाते हैं कि **इब्ने आदम उन्हें 'अद-दह्र' — ज़माने — को कोस कर

नाराज़ करता है, क्योंकि वही हैं जो रात और दिन के बदलने को चलाते हैं।** बेटा, जब एक शख़्स 'मेरी क़िस्मत', 'ज़माना', 'ये दौर' को इल्ज़ाम देता है, **वो एक मख़लूक़ चीज़ को उसके ख़ालिक़ के अमल का इल्ज़ाम दे रहा है।**

'कुलिल्लाहु युह्यीकुम सुम्म युमीतुकुम सुम्म यज्मअ'उकुम इला यौमिल्-क़ियामति ला रैब फ़ीह — कहो: अल्लाह तुम्हें ज़िंदगी देता है, फिर तुम्हें मौत देता है, फिर तुम्हें क़ियामत के दिन **जमा** करेगा, जिसमें **कोई शक नहीं।**'

हर क़ौम घुटनों के बल

और अब, बेटा, वो मंज़र जो इस सूरह को उसका नाम देता है — और ये क़ुरआन के सब से होला देने वाले मंज़रों में से एक है।

'**व तरा कुल्ल उम्मतिन जासियह** — और तुम **हर उम्मत** को **घुटनों के बल** गिरा हुआ देखोगे।'

बेटा, '**जासियह**' — घुटनों के बल, आगे घुटनों पर गिरे हुए, उस शख़्स की सूरत जिसकी टाँगें जवाब दे गई हों, या उस मुल्ज़िम की जो कचहरी के सामने ढह गया हो। **ये लफ़्ज़ एक ऐसे जिस्म को बयान करता है जो खड़ा नहीं हो सकता।**

और ये कहता है **हर उम्मत।** हर फ़र्द नहीं — हर **उम्मह।** क़ौमें, तहज़ीबें, सल्तनतें, झंडे और तराने और तारीख़ों वाले लोग — **उन सब के, घुटनों के बल, एक साथ।**

बेटा, सोचो कि इस दुनिया में एक क़ौम क्या होती है: ये खड़ी होती है, मार्च करती है, ख़ुद को अज़ीम एलान करती है, दूसरों को हक़ीर समझती है। **और उस दिन, हर एक को एक वाहिद सूरत से बयान किया जाता है: घुटनों के बल।**

'कुल्लु उम्मतिन तुद्'आ इला किताबिहा — हर क़ौम अपने **रिकॉर्ड** की तरफ़ **बुलाई** जाएगी — अल्-यौम तुज्ज़ौन मा कुन्तुम त'अ्मलून — **आज** तुम्हें उस का बदला दिया जाता है जो तुम करते थे।'

और फिर, बेटा, एक आयत जो आपके साथ रह जाएगी: '**हाज़ा किताबुना यन्तिकु

'अलैकुम बिल्-हक़्क़** — **ये, हमारा रिकॉर्ड, तुम्हारे बारे में सच सच बोलता है** — **इन्ना कुन्ना नस्तन्सिख़ु मा कुन्तुम त'अ्मलून** — बेशक, **हम लिखवा रहे थे** जो कुछ तुम करते थे।'

बेटा, **रिकॉर्ड बोलता है।** इसे कोई मुंशी पढ़ कर नहीं सुनाता — **किताब ख़ुद गवाही देती है।** और ज़माना ग़ौर कीजिए: 'कुन्ना नस्तन्सिख़' — **हम इसे लिखवा रहे थे, मुसलसल, पूरे वक़्त, जब तुम जी रहे थे।**

'फ़-अम्मल्-लज़ीन आमनू व 'अमिलुस्-सालिहाति फ़-युद्दिख़लुहुम रब्बुहुम फ़ी रहमतिह — तो जिन्होंने ईमान लाए और नेक अमल किए, उनका रब उन्हें **अपनी रहमत** में दाख़िल करेगा — ज़ालिक हुवल्-फ़ौज़ुल्-मुबीन — यही **खुली कामयाबी** है।'

बेटा, अल्फ़ाज़ फिर देखिए — वो उन्हें **अपनी रहमत** में दाख़िल करता है। *'उनके अज्र में'* नहीं। **जीतने वाले भी रहमत के दरवाज़े से दाख़िल होते हैं।**

और मुनकिरों से कहा जाएगा: 'अ फ़-लम तकुन आयाती तुल्ला 'अलैकुम **फ़स्तक्बर्तुम** — क्या मेरी आयतें तुम्हारे सामने न पढ़ी जाती थीं, मगर तुमने **ग़ुरूर** किया?' बेटा, उनके नुक़सान की दी गई वजह ग़ौर कीजिए: **जहालत नहीं, बल्कि ग़ुरूर। उन्होंने सुना था।**

उन को माफ़ करो जो उम्मीद नहीं रखते

और सूरह के ख़त्म होने से पहले, बेटा, एक ऐसा हुक्म है जिसे छूट जाना आसान है और अमल करना ख़ूबसूरत:

'**क़ुल लिल्लज़ीन आमनू यग़्फ़िरू लिल्लज़ीन ला यर्जून अय्यामल्लाह** — **ईमान वालों से कहो कि वो उन लोगों को माफ़ कर दें जो अल्लाह के दिनों की उम्मीद नहीं रखते** — लि-यज्ज़िय क़ौमम्-बिमा कानू यक्सिबून — ताकि वो एक क़ौम को उस का **बदला** दे जो वो कमाते थे।'

बेटा, सूरत-ए-हाल समझिए। मक्का में मुसलमानों की उन लोगों के हाथों बे-इज़्ज़ती,

अज़िय्यत और मज़ाक़ उड़ाया जा रहा था **जो किसी हिसाब-किताब पर बिल्कुल ईमान नहीं रखते थे।** और अल्लाह मोमिनीन को हुक्म देते हैं: **उन्हें माफ़ करो। दर-गुज़र करो। जाने दो।**

और दी गई वजह क़ाबिल-ए-ज़िक्र है: *'वो जो अल्लाह के दिनों की उम्मीद नहीं रखते'* — यानी **वो लोग जो यक़ीन नहीं करते कि हिसाब का कोई दिन आ रहा है।**

बेटा, इस में गहरी हिकमत है। जब कोई तुम पर ज़ुल्म करे और यक़ीन न रखे कि वो कभी इसका जवाब देगा, **तो तुम्हारा ग़ुस्सा उस पर ज़ाया होता है — मगर कुछ नहीं खोता, क्योंकि अल्लाह बदला देंगे। तुम्हारी माफ़ी इंसाफ़ को मंसूख़ नहीं करती; ये बस मामला एक ऐसी कचहरी को मुंतक़िल कर देती है जो फ़ाइल नहीं खोती।**

बेटा, इसे अपनी ज़िंदगी में लगाओ। वो साथी जो तुम्हारे काम का सेहरा लेता है। वो रिश्तेदार जिसने तुम पर तोहमत लगाई। वो शख़्स जिसने तुम्हें धोका दिया और चैन से सोता है। **तुम्हारे पास दो चुनाव हैं: बरसों कीना उठाओ और उसे तुम्हें खाने दो — या माफ़ करो, आगे चलो, और अल्लाह को निमटने दो।**

'**मन 'अमिल सालिहन फ़-लि-नफ़्सिह** — जिसने नेक अमल किया, वो **अपने लिए** — **व मन असा-अ फ़-'अलैहा** — और जिसने बुरा किया, वो **उसी के ख़िलाफ़** — सुम्म इला रब्बिकुम तुर्जऊन — फिर अपने रब की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे।'

और सूरह तारीफ़ के साथ ख़त्म होती है: '**फ़-लिल्लाहिल्-हम्दु रब्बिस्-समावाति व रब्बिल्-अर्ज़ि रब्बिल्-'आलमीन** — तो सारी **तारीफ़ अल्लाह** के लिए है — आसमानों का रब, ज़मीन का रब, **जहानों का रब** — **व लहुल्-किब्रिया-उ फ़िस्-समावाति वल्-अर्ज़** — और आसमानों और ज़मीन में **बड़ाई** उसी के लिए है।'

बेटा, बनावट देखिए: सूरह **आसमानों और ज़मीन की निशानियों** से शुरू हुई, एक ऐसे आदमी से गुज़री **जिसने अपनी ख़्वाहिश को पूजा**, **क़ौमों को घुटनों के

बल** दिखाया — और ये एलान कर के ख़त्म हुई कि **सारी बड़ाई सिर्फ़ अल्लाह की है।** **हर ज़र्रा ग़ुरूर जो एक इंसान उठाता है एक ऐसे गुदाम से उधार लिया गया है जो कभी उसका था ही नहीं।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. निशानियाँ हर एक के लिए एक जैसी हैं — फ़र्क़ पढ़ने वाले आले में है: ईमान, यक़ीन, और अक़्ल।

2. 'गोया उसने सुना ही न हो' वाले बहरेपन से बचो — कान चलते हैं, ज़िंदगी न बदले।

3. 'हवा' के मज़हब के लिए ख़ुद को जाँचो: क्या हुक्म तुम्हारे लिए मामला तय करता है, या तुम इजाज़त के लिए ख़रीदारी करते हो?

4. मुहर चुनाव के **बाद** आती है — अल्लाह उस दिल को कभी ताला नहीं लगाते जो उन्हें तलाश कर रहा था।

5. 'बस यही ज़िंदगी' एक गुमान है जो यक़ीन के तौर पर पेश किया जाता — और 'ज़माने' को इल्ज़ाम देना उसके ख़ालिक़ को इल्ज़ाम देना है।

6. लिखाई अभी जारी है — और उस दिन रिकॉर्ड **बोलता** है, सच, कुछ जोड़े बग़ैर।

7. उन को माफ़ करो जो हिसाब से नहीं डरते: तुम इंसाफ़ मंसूख़ नहीं कर रहे, सिर्फ़ मामला एक ऐसी कचहरी को मुंतक़िल कर रहे हो जो कुछ नहीं खोती।

या रब्बल-'आलमीन, हमें अपनी ख़्वाहिशों की इबादत से बचाइए, हमारे दिलों को बे-मुहर रखिए, और हमारे रिकॉर्ड को हमारे हक़ में अच्छा बोलने दीजिए। आमीन।